THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

एक केन्द्रित जीवन
A Life In Focus

Author – Michael Morgan

The Christian Science Journal Vol. 127, No. 10, October, 2009

कॉलेज से स्नातक होने के बाद मैंने सोचा, मैं सब कुछ जानता था, जो जानने योग्य था। साथ ही मेरे पास वह डिप्लोमा था और मैंने अपनी टोपी हवा में उछाली, और मुझे ऐसा लगा कि मैं दुनिया जीतने की अपनी राह पर था, और मुझे कुछ नहीं रोक सकता, कुछ भी नहीं।

अपने विश्वविद्यालय में एकमात्र क्रिश्चियन साय़ँटिस्ट होने के नाते, मेरे पास अपने आप को टटोलने के बहुत सारे अवसर थे, कि एक क्रिश्चियन साय़ँटिस्ट होने का क्या अर्थ है। मैंने, परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को अधिक गहराई से जाना और मैं उसे बिना बन्धनों के कैसे अभिव्यक्त करता था। क्योंकि मैं और अधिक जानना चाहता था और मेरी पढ़ने की सूची मेरे उप–स्नातक की गर्मियों की यूरोप की यात्रा में जने से पहले छोटी तथा सरल थी; आखिरकार मैंने क्रिश्चियन सायँस की पाठ्य पुस्तक *"सायँस एंड हैल्थ"* को शुरु से अन्त तक पढ़ने का निश्चय किया।

अपनी यात्रा शुरू करने से एक सप्ताह पहले, एक सुबह मैं अपनी आंख में कुछ अजीब महसूस करते हुए उठा। मैंने उसे तुरन्त नहीं देखा, परन्तु कुछ समय की बेचैनी के बाद मैंने शीशे में देखा कि आंख बहुत लाल थी। इन लक्षणों ने मुझे इसी तरह के एक कष्ट की याद दिलाई जो मुझे पहले था। उसके परिणाम–स्वरूप मैंने आठ वर्षों तक दूध की बनी हुई चीज़े खानी बन्द कर दी थी। मैंने तुरन्त ही *सायँस एंड हैल्थ* के विचारों पर कार्य करना शुरू कर दिया, साथ ही मेरी बेकर ऐडी के द्वारा *आंखों* की आध्यात्मिक व्याख्या को सम्मिलित करते हुए, "आध्यात्मिक समझ–भौतिक नहीं बल्कि मानसिक" (पृष्ठ 586)। मेरे लिए आध्यात्मिक समझ होने के नाते, दृष्टि का अर्थ था हर किसी और हर चीज़ के भौतिक आभास पर केन्द्रित करने के बजाए, परमेश्वर के गुणों को देखना। क्योंकि मेरी देखने की क्षमता परमेश्वर से आई थी न कि परितारिका से, मैं जानता था दृष्टि आध्यात्मिक थी तथा भौतिकता पर निर्भर नहीं थी। बेचैनी जल्दी ही चली गई। मैंने पढ़ना जारी रखा तथा उस रात गहरी नींद में सोया।

अगली सुबह मैंने उठने पर पाया कि मैं मुश्किल से वह आंख खोल पा रहा था, तथा मुझे देखने मे बहुत अधिक मुश्किल हो रही थी। मैं दुबारा से बाइबल तथा *सायँस एंड हैल्थ* पढ़ने लगा, परन्तु चीज़े बद से बदतर होती प्रतीत हुई जब तक कि आंख पूर्णतः बन्द नहीं हो गई। मैं बहुत चिन्तित था कि यह समस्या मेरी यात्रा को प्रभावित कर सकती है, और तब मैंने एक क्रिश्चियन साँयस उपचारक से सम्पर्क किया। उनके शान्त तथा सांतवना देने वाले शब्द सरल थे, क्रिश्चियन साँयस के बुनियादी सिद्धांतों को याद दिलाने वाले जों मैंने बचपन मे सीखे थेः "इतना ही जानो कि परमेश्वर सम्पूर्ण है।" मैंने सोचा यह धारणा ज़रूरत से ज़्यादा सरल थी, परन्तु मैंने इसके साथ प्रार्थना करने का निश्चय किया। मैंने पहली बार

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2010 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

Spirituality.com का सर्च इंजन *आंख* टाइप करके इस्तेमाल किया, तथा इससे सम्बन्धित अनेक उपचार के अनुभव ढूँढे। एक उपचार का अनुभव जो एक युवती द्वारा लिखित था, मुझे मिला जिसकी स्थिति मुझसे बहुत मिलती जुलती थी। वह विदेश में पढ़ रही थी जब उसकी आंखें सूज गईं, जिसके कारण उसे घर लौटने के लिए विवश होना पड़ा। उस कष्ट को खुद निपटाने की कोशिश करने के बाद उसने एक क्रिश्चियन सायँस उपचारक से बात की। उसने लिखा था: "मेरा उन्हें अपनी स्थिति का वर्णन करने के बाद उन्होंने मुझसे पूछा मेरे जीवन में क्या चल रहा था। मैंने उन्हें बताया मैंने बस अभी कॉलेज से स्नातक की है तथा अपने अगले कदमों पर ध्यान दे रहा हूँ। वह कुछ देर रूके और फिर कहा, 'यह आँख की इतनी समस्या नहीं है जितनी यह *मैं* की समस्या है!'... जिस समय तक मैंने फोन रखा, मेरी आंखे बिल्कुल स्पष्ट थीं" (जरनल, दिसम्बर 2007, पृष्ठ 35)।

मैंने उन शब्दों को पढ़ने के बाद लम्बी साँस ली। चाहे मैं तुरन्त शारीरिक रुप से स्वस्थ नहीं हुआ था, उसी क्षण मेरी सोच पूर्णतः बदल गई। मैं अपने पर इतना केन्द्रित था–मेरे नए साहसिक कार्यों तथा मेरे नए भविष्य में–कि मैंने **परमेश्वर** को पूर्णतः दृश्य से बाहर कर दिया था। अपने स्वयं के अह्म को बढ़ाने के बजाए, मुझे एकमात्र शक्ति, **परमेश्वर** को स्वीकारने तथा अपनी इच्छाशक्ति को नम्रता सहित समर्पित करने की आवश्यकता थी। उपचारक के व्यवहारिक तथा सरल शब्दों ने एकाएक पूर्णतः नया तथा शक्तिशाली अर्थ धारण कर लिया था।

निम्नलिखित बाइबल का कथन भी मुझे प्रेरित कर रहा था: "मैं स्वयं अपने आप कुछ नहीं कर सकता" (युहन्ना 5:30)। क्योकि **परमेश्वर** मेरे अच्छे का स्त्रोत था, यह सोचना बेतुका था कि मैं बिना **परमेश्वर** के महान कार्य कर सकता था। मेरी उपलब्धियाँ मेरी अपनी नहीं थी; वे मेरे असली **माता–पिता, परमेश्वर** के साथ मेरे सम्बन्ध की दृढ़ता का प्रमाण थीं। *सायँस एंड हैल्थ* का एक उत्कृष्ट लेखांश इस सम्बन्ध का उदाहरण देता है : "आध्यात्मिक मानव इस **अह्म** का प्रतिरूप है। मानव **परमेश्वर** नहीं है, अपितु रोशनी की एक किरण की तरह जो सूर्य से निकलती है, मानव, **परमेश्वर** का प्रतिफल, **परमेश्वर** को प्रतिबिम्बित करता है" (पृष्ठ 250)। इस लेखांश में शब्द **अह्म** का अभिप्राय **परमेश्वर** से है। जेसे ही मैंने उसके साथ अपने सम्बन्ध को बेहतर समझने के लिए प्रार्थना की, मैंने खुद के अह्म की समझ को छोड़ना शुरू कर दिया तथा अपते जीवन को **परमेश्वर** के हाथों में सौंप दिया।

मैंने पढ़ना जारी रखा ओर *सायँस एंड हैल्थ* के आखिरी अध्याय "फ्रूटेज", तक पहुँच गया, जो केवल उसा किताब को पढ़ने तथा अध्य्यन करने मात्र से लोगों द्वारा प्राप्त किए गए उपचारों का विवरण प्रस्तुत करता है। मैं सदा आश्चर्यचकित होता था कि मैं उन लोगों के उपचारों से सम्बन्ध कैसे स्थापित कर सकता था जो एक शताब्दी पहले रहते थे। परन्तु जेसे मैं आगे बढ़ा, मैंने पाया कि हर कुछ पृष्ठों पर आंखों से सम्बन्धित स्वस्थ होने की एक गवाही थी। अधिक्तर बिल्कुल उन चुनौतियों जैसी थीं जिस प्रकार की मैं अनुभव कर रहा था। "फ्रूटेज" की गवाहियों का निश्चित रूप से मेरे उपचार में महत्वपूर्ण योगदान था। उनके द्वारा मुझे पढ़ना अच्छा लगने लगा तथा मैंने उन लोगों के ज़्यादा करीब महसूस किया, जिनमें से अधिकतर ने क्रिश्चियन सायँस के द्वारा प्राप्त करने से पहले अपना पूरा जीवन स्वस्थ होने की खोज में बिता दिया था।

वह दिन अन्ततः आ गया जब मुझे यूरोप के लिए निकलना था, परन्तु अभी भी मेरी आंख पूर्णतः सामान्य नहीं हुई थी। फिर भी, मैं काफी ठीक से देख सकता था तथा बिल्कुल भी परेशान नहीं था कि आंख कैसी लग रही थी। हर दिन मैंने अपने बहुमुल्य समय में प्रार्थना को बाकी गतिविधियों के ऊपर

Translation © 2010 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

प्राथिमिकता दी। मैं शीशे में अपनी आंख को न देखने पर डटा रहा, तथा परमेश्वर के प्रतिबिम्ब होने के नाते अपनी पूर्णता की समझ को केन्द्रित किया।

मेरे यूरोप पहुँचने के कुछ दिनों के अन्दर–मैं एकदम ठीक ठीक नहीं बता सकता, कब–मेरी आंख पूर्णतः ठीक हो गई थी। मैंने परमेश्वर में पूर्णतः यकीन करना जारी रखा तथा इस उपचार को अपने अगले दो महीनों में विदेश से वापस जाने तक संजोये रखा। जैसे ही मैंने अपना उत्तम हिस्सा परमेश्वर के कार्यों के लिए उसे सुनकर तथा मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करके किया, मैंने अपनी यात्रा को आशीषों तथा उपचारों से भरपूर पाया। न केवल मेरी आंख ठीक हुई, बल्कि मैं कई तरह की ऐलर्जो तथा उनके भय से भी पूर्णतया मुक्त हो गया था। मैं दूध से बनी चीज़ें पहली बार बिना ऐलर्जो की प्रतिक्रया के खा रहा था। साथ ही, यात्रा के दौरान परमेश्वर में मेरे नए विश्वास तथा उसके लिए कार्य करने की तत्परता, मुझे नशे की गोलियों तथा शराब की इच्छा से एक आश्चर्यजनक उपचार की तरफ ले गई, जिनसे मैं बहुत समय से संघर्ष कर रहा था।

यह एक ओर नवयुवक का आध्यात्मिक प्रारंभ था, इस पत्रिका में पहले प्रकाशित, जो मेरे विचारों को परिवर्तन तथा उपचार की ओर ले गया। मेरी आशा है कि मेरा अनुभव दूसरों को भी प्रेरित करेगा जो उपचार की खोज में है।

Translation © 2009 The Christian Science Publishing Society. This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.